शिवाजी

सत्यकाम विद्यालंकार

शिवाजी

सत्यकाम विद्यालंकार

शिक्षा भारती, मदरसा रोड, कश्मीरी गेट, दिल्ली

मूल्य : [redacted]00)

संस्करण : 1991 © प्रकाशक

शिक्षा भारती, कश्मीरी गेट, दिल्ली, द्वारा प्रकाशित

SHIVAJI (Biography), by Satyakam Vidyalankar

सूची

जन्म और बाल्यकाल	5
बचपन की उमंग	8
पिता का संकट से उद्धार	10
असफल छल	13
औरंगज़ेब के दांव-पेंच	15
अफज़लखां का संदेश	17
शिवाजी का जवाब	19
खूनी भेंट	20
औरंगज़ेब से मुठभेड़	24
घोर युद्ध	27
शेर पिंजरे में	28
पिंजरे से बाहर	30
मुगलों से संधि और शर्तें	32
सिंहगढ़ की विजय	34
राजतिलक	37
सूर्यास्त	39

जन्म और बाल्यकाल

शिवाजी का जन्म 10 अप्रैल 1627 ईस्वी में हुआ था। उनके पिता शाहजी उस समय बाजीपुर के शासक मुहम्मद आदिलशाह के अधीन काम करते थे। शाहजी वीर पुरुष थे। शिवाजी की माता का नाम था जीजाबाई। ईश्वर में उनकी अटूट भक्ति थी। इसी भक्ति के कारण उन्होंने अपने पुत्र का नाम 'शिवाजी' रखा था।

पुत्र-जन्म के कुछ दिन बाद शाहजी ने उस समय की प्रचलित प्रथा के अनुसार दूसरी शादी कर ली। इस कारण जीजाबाई शिवाजी के जन्म-स्थान शिवनेर से पूना आ गईं। शिवाजी की शिक्षा का भार एक बहुत योग्य तथा अनुभवी गुरु दादा कोंडदेवजी को सौंपा गया।

बचपन से ही शिवाजी स्वाधीनता-प्रिय थे। उनकी माता जीजाबाई और उनके शिक्षक कोंडदेव ने उन्हें वीरता का पाठ पढ़ाया था। पुस्तकों से यद्यपि शिवाजी को विशेष प्रेम न था, परन्तु पूर्वजों की शूरवीरता की कहानियां उनके हृदय में उत्साह का संचार कर देती

थीं। बचपन से ही वे पूना के पर्वतों के निवासी जंगली मावलियों के साथ खेल-खेल में व्यूह-रचना किया करते थे। मावली लोग शिवाजी के भक्त हो गए थे। उनके साथ शिवाजी आधी-आधी रात तक जंगलों-पहाड़ों में

घूमा करते। उनके जंगलों में अधिक रहने के कारण एक बार यह भी प्रसिद्ध हो गया था कि शिवाजी डाकुओं से मिल गए हैं।

शिवाजी का असाधारण स्वाधीनता-प्रेम उनके बाल्यकाल की एक चेष्टा से प्रकट होता है। एक दिन शिवाजी बीजापुर के दरबार में आए। दरबार के शिष्टाचारों से परिचित कराने के लिए ही शाहजी उनको ले गए थे। वहां जाकर शिवाजी ने सब शिष्टाचारों का उल्लंघन करके शाह के सामने सिर न झुकाया बल्कि दरबार से वापस जाकर अपने आपको शुद्ध करने के विचार से कपड़े बदले तथा स्नान किया।

शिवाजी की महत्त्वाकांक्षा उनके बचपन से ही प्रकट होने लगी थी। वे मावलियों को इकट्ठा करते और आसपास के दुर्गों पर अधिकार करने के मनसूबे बांधा करते। राज्य पाने का बचपन से ही इतना शौक था कि लगभग तेरह वर्ष की आयु में ही राज्य का स्वप्न लेने लगे थे। इस उमर में शिवाजी ने एक मुहर बनवाई, जिसपर यह शब्द थे :

"यद्यपि पहले चन्द्र बहुत छोटा होता है परन्तु धीरे-धीरे वह बहुत बढ़ जाता है।"

बचपन की उमंग

बीस वर्ष की उमर में हो शिवाजी लड़ाई के लिए तैयार हो गए। उनकी छोटी-सी देह में महत्त्वाकांक्षा का जो समुद्र लहरा रहा था, उसका कुछ संकेत उनकी इन चेष्टाओं से मिल गया। अपने तीन बालसखाओं और एक हज़ार सिपाहियों को साथ लेकर शिवाजी ने बीस वर्ष की अवस्था में ही बीजापुर के प्रसिद्ध दुर्ग 'तोरण' पर धावा बोल दिया। बिना विशेष परिश्रम के ही दुर्ग पर शिवाजी का अधिकार हो गया। मशहूर था कि उस दुर्ग में बड़ा भारी खज़ाना गड़ा है। खुदाई शुरू हुई। खज़ाना भी मिल गया। मराठा वीरों ने समझा कि भवानी प्रसन्न हैं। श्रद्धालु लोग शिवाजी को वास्तव में शिवजी का ही अवतार समझने लगे। इस विजय से शिवाजी का यश खूब फैलने लगा। उनका उत्साह भी दूना हो गया।

खुदे हुए खज़ाने से प्राप्त धन को अन्य किलों की मरम्मत में लगाया गया। छः मील दूर पर लोहवध नाम की एक पहाड़ी थी। उसपर राजगढ़ नाम से एक

अजेय दुर्ग बनाया गया। सेनाओं की नई भर्ती हुई। धर्म के दुश्मन मुसलमानों के शासन से तंग आए हुए मराठे युवक शिवाजी की सेना में सम्मिलित होने लगे। शीघ्र ही शिवाजी नौजवानों के आशा-केन्द्र बन गए।

कुछ ही समय बाद शिवाजी ने अपने बल, युद्ध, कौशल और नीति से सूपा, चाकण, पुरन्दर, कोंकण आदि कई किलों पर अधिकार कर लिया। मराठा सेनाएं चारों दिशाओं में फैलने लगीं। कल्याण और कोलाबा के आधा दर्जन किलों पर भी शिवाजी के सैनिकों का कब्ज़ा हो गया। रायगढ़ भी शिवाजी की अधीनता में आ गया। शिवाजी का हृदय इन विजयों से उत्साहित हो गया। इतनी सफलता की उन्हें कल्पना भी नहीं थी।

पिता का संकट से उद्धार

शिवाजी की वीरता के समाचार बीजापुर के दरबार में भी पहुंचे। बीजापुर-दरबार में शिवाजी के पिता शाहजी नौकर थे। शिवाजी का विद्रोह और शाहजी की नौकरी साथ-साथ कैसे चल सकती थी! आखिर बीजापुर के नवाब ने एक चिट्ठी स्वयं शिवाजी को लिखी। दूसरी शाहजी से लिखवाई। दोनों चिट्ठियों को पाकर शिवाजी सन्देह में पड़ गए। परन्तु अपने योग्य और अनुभवी शिक्षक दादा कोंडदेव के आदेश को पाकर उन्होंने कर्तव्य के मार्ग को ही चुना। नवाब को शिवाजी ने लिख दिया, "यदि मेरी जीती हुई ज़मीन मुझे ही दे दी जाए तो मैं उपस्थित हो सकता हूं।" शाहजी को लिख दिया, "मैं अब बच्चा नहीं रहा। अपना बुरा-भला सोचने की शक्ति मुझमें है।"

नवाब का दिल शिवाजी के उत्तर से और भी जल गया। शिवाजी पर जब जलन न मिट सकी तो उनके पिता शाहजी को उसने धोखे से कैद करवा लिया। शाहजी अन्त तक कहते रहे, "पुत्र के विद्रोह

से मेरा कोई सम्बन्ध नहीं।" मगर नवाब ने एक न सुनी। शाहजी को एक अंधेरी कोठरी में कैद कर दिया गया। कोठरी में केवल एक सुराख था। शाहजी से कह दिया गया कि यदि वे अब भी शिवाजी को विद्रोह के मार्ग से न हटाएंगे तो वह सुराख भी बन्द कर दिया जाएगा। इसी संकटापन्न अवस्था में शाहजी से एक और पत्र शिवाजी के लिए लिखवाया गया।

पत्र पाकर शिवाजी फिर असमंजस में पड़ गए।

एक ओर व्रत टूटता था, दूसरी ओर पिता की मृत्यु थी। दोनों ओर पाप था। आखिर शिवाजी के प्रतिभाशाली मस्तिष्क ने एक उपाय निकाल ही लिया। उन्होंने दिल्ली के बादशाह शाहजहां को शाहजी को छुड़ाने के लिए प्रार्थना-विषयक एक पत्र लिखा। शाहजहां तो दक्षिण में हस्तक्षेप करने का अवसर खोज ही रहा था। शिवाजी की चिट्ठी पहुंचते ही उसने शाहजी की मुक्ति का आज्ञा-पत्र भेज दिया। उसने शिवाजी को भी पांचहज़ारी पद देना स्वीकार किया। मगर यह तो शिवाजी की चाल थी, अन्यथा वे कब मुगल शासकों के अधीन रहना चाहते थे!

शिवाजी के कौशल ने शाहजी को छुटकारा दिलवा दिया। शिवाजी स्वयं दरबार में पांचहज़ारी पद लेने

के लिए हाज़िर नहीं हुए। उन्होंने सन्धि की शर्तें इतनी कड़ी रख दीं कि सन्धि होना असम्भव हो गया। बीजापुर-दरबार और दिल्ली-दरबार, दोनों शिवाजी के इस चमत्कार पर चकित रह गए।

शाहजी हृदय से शिवाजी की सफलता चाहते थे। ऊपर से वे अवश्य शिवाजी को विद्रोही बनने से रोकते थे, मगर हृदय से विद्रोह की प्रचण्डता चाहते थे। उनका भाव उनके निम्न पत्र से प्रकट है:

"जो कार्य तुमने आरम्भ किया है उसे अवश्य पूर्ण करना। भगवान् की अवश्य कृपा होगी। तुम्हारे शत्रुओं की स्त्रियां शोक के आंसू बहाएंगी। परमात्मा तुम्हारी मनोकामना पूरी करे। तुम्हारी समृद्धि बढ़े।"

पिता के इन वाक्यों ने शिवाजी को और भी उत्साहित कर दिया था। वे प्राण-पण से मुगल साम्राज्य का समूल नाश करने के लिए तैयार हो गए।

असफल छल

बीजापुर के नवाब ने भी शिवाजी का सदा के लिए अन्त करने की ठान ली थी। आमने-सामने के युद्ध में आने का जब उसे साहस न हुआ, तो छल-बल से शिवाजी को नीचा दिखाने का प्रयास किया गया। नवाब ने बाजी शामराज नाम के एक व्यक्ति को शिवाजी की हत्या के लिए भेजा। शामराज की सहायता के लिए जावली का सरदार चन्द्रराव भी तैयार हो गया। मगर यह चाल सफल न हो सकी। शिवाजी सोए हुए नहीं थे। उनके गुप्तचर दुश्मन के घर तक पहुंचे हुए थे। उन्होंने तुरन्त सूचना दी। मुठभेड़ होने पर शामराज जावली भाग गया। शिवाजी ने जावली के नवाब को चेतावनी दे दी, "या तो तुम मेरे साथ मिल जाओ या लड़ने के लिए तैयार हो जाओ!" नवाब ने छल से शिवाजी को कैद कराने के लिए यत्न किया। मगर शिवाजी कब काबू में आने वाले थे। शिवाजी अपने दो दूतों को छोड़कर स्वयं वहां से चले गए। दोनों ने सन्धि की कोशिश की, परन्तु सफलता

न मिली। आखिर तलवारें म्यान से बाहर आ गईं; खूब जमकर लड़ाई हुई। चन्द्रराव मारा गया। शिवाजी भी समीप तम्बू डालकर पड़े थे। चन्द्रराव की मृत्यु का समाचार पाकर शिवाजी ने जावली पर अधिकार कर लिया। जावली में शिवाजी को बहुत-सा धन मिला। इस धन से उन्होंने 'प्रतापगढ़' नामक किले की स्थापना की।

औरंगजेब के दांव-पेंच

औरंगज़ेब ने सब भाइयों का खून करके दिल्ली के सिंहासन पर अधिकार कर लिया था। इस समय वह बाहर वालों से कम से कम लड़ाई लड़ना चाहता था। शिवाजी ने भी औरंगज़ेब की थाह पाने के लिए सन्धि की बातचीत चला दी। दोनों के दिलों में खोट था। औरंगज़ेब सन्धि के बहाने शिवाजी को मृत्यु की गोद में पहुंचा देना चाहता था। शिवाजी इतने मूर्ख नहीं थे। वे इस चाल को ताड़ गए। सन्धि की बातचीत अवश्य चलती रही, मगर दिल एक न हुए।

शिवाजी ने रघुनाथ पंत और कृष्णजी भास्कर को सन्धि की बातचीत करने के लिए दिल्ली भेजा। औरंगज़ेब ने भी कोंकण प्रान्त पर शिवाजी का अधिकार रहने की अनुमति दे दी। मगर औरंगज़ेब शिवाजी को ही सबसे बड़ा दुश्मन समझता था। अपने पत्र-व्यवहार में वह शिवाजी को 'कुत्ते का बच्चा' लिखा करता था। मुगल सेनापति भी शिवाजी को 'पहाड़ी चूहा' या 'लुटेरा'

कहा करते थे। शिवाजी पर औरंगज़ेब का कितना क्रोध था, यह उसके निम्न पत्र से स्पष्ट है। पत्र में उसने सरदारों को लिखा था—

'मुगल सेनापतियों को चाहिए कि वे लुटेरों को राज्य की हद से बाहर खदेड़ दें और शिवाजी की जागीर में घुसकर गांवों को उजाड़ दें, बेदर्दी से प्रजा को कत्ल कर दें और चाकन (शिवाजी की जायदाद) को बिलकुल तबाह कर दें और लोगों को मारने व गुलाम बनाने में कोई दया न बरती जाए।'

इतनी ज़हरीली मनोवृत्ति के साथ भला सन्धि क्या हो सकती थी! सन्धि हुई—मगर अधूरी। बीजापुर के इलाकों के सम्बन्ध में औरंगज़ेब ने लिख दिया था कि "बाद में विचार किया जाएगा", और सेनाओं के सम्बन्ध में औरंगज़ेब ने लिख दिया कि "बाद में भेजी जाएंगी।" वस्तुतः दोनों दांव-पेंच खेल रहे थे। उसी समय औरंगज़ेब ने दक्षिण के अफसरों को लिखा—"उस लुटेरे का ख्याल रखना, कहीं मौका पाकर आक्रमण न कर दे।"

अफज़लखां का संदेश

बीजापुर-दरबार भी सावधान था। एक बार राज्य की सम्पूर्ण शक्ति लगाकर वह शिवाजी का अन्त कर देना चाहता था। बीजापुर का शासक उस समय अभी बालक ही था। उसने एक दिन अपने सब सरदारों को बुलाकर पूछा, "शिवाजी का सिर नीचा कौन करेगा ?"

इस प्रश्न का उत्तर एक पर्वतकाय मुगल अफज़लखां ने दिया, "मैं शिवाजी को एक चुटकी में मसल डालूंगा।" उसका यह विश्वास था। 'पहाड़ी चूहे' को बीजापुर की कैद में शीघ्र बन्द करने की उसने प्रतिज्ञा कर ली। बारह हजार चुने हुए सिपाही उसके साथ हो गए। मुगल सेना सावन-भादों की घटा की तरह उमड़ चली।

सबसे पहले उसने शिवाजी के राज्य की दक्षिणी सीमा पर आक्रमण किया। वहां तुलजापुर नाम का किला उसके अधिकार में आ गया। वहां भवानी का मन्दिर भी था। मन्दिर में गौ का खून छिड़ककर

अफज़लखां ने अपनी धर्मान्धता शांत की। यहां से अफज़लखां पंढरपुर चला गया। वहां के मन्दिर की मूर्तियां उसने नदी में फिकवा दीं। यहां से वह बाई नामक स्थान पर पहुंचा। वहां उसने 'मरहठा शेर' को बन्द करने के लिए लोहे का पिंजड़ा तैयार करवाया।

शिवाजी अफज़लखां की इतनी भारी फौज को देखकर कुछ चिन्तित हुए। मगर कहते हैं कि भवानी ने स्वप्न में दर्शन देकर शिवाजी को धैर्य बंधाया। प्रातः काल युद्ध की घोषणा कर दी गई।

अफज़लखां के दिल में खोट था, वह शिवाजी को चालाकी से मारना चाहता था। इसलिए उसने शिवाजी से एकान्त में मिलने की तजवीज निकाली। उसने कृष्णजी भास्कर नाम के एक दूत को संधि की बातचीत करने के लिए शिवाजी के पास भेजा। इनके हाथ अफज़लखां ने शिवाजी को यह कहलवाया, "तुम्हारे पिता मेरे पुराने मित्र हैं। मैं भी तुमसे मित्र की हैसियत से मिलना चाहता हूं। तुमसे भेंट करने के बाद मैं आदिलशाह से सिफारिश करूंगा कि वे कोंकण प्रदेश और तुम्हारे जीते हुए किले तुम्हारे पास रहने दें।"

शिवाजी का जवाब

कृष्णजी भास्कर का शिवाजी ने उचित आदर किया। कृष्णजी भास्कर आखिर हिन्दू ही था। शिवाजी ने उस ब्राह्मण से एकांत में बातचीत की तो वह फूट पड़ा। उसने अफज़लखां के निमन्त्रण का रहस्य खोल दिया। बहुत सोचकर उन्होंने दूत के हाथ कहला भेजा, "मैं इस कृपा के लिए आपका धन्यवाद करता हूं। मैं भी मिलने को उत्सुक हूं।" कृष्णजी भास्कर के साथ शिवाजी का दूत पन्तोजी गोपीनाथ भी गया। उसने अफज़लखां को पूर्ण विश्वास दिला दिया कि शिवाजी वास्तव में डरा हुआ है और माफी मांगने को तैयार है। पन्तोजी गोपीनाथ के हाथ शिवाजी ने यह भी कहला भेजा कि भेंट का स्थान दोनों छावनियों के मध्य में होना चाहिए। अफजलखां ने शिवाजी की इस मांग पर कोई आपत्ति न की। आखिर शिवाजी के डेरे प्रताप गढ़ तथा अफज़लखां की छावनी बाई के बीच में पाट नामक ग्राम के पास एक चौड़ा मैदान साफ करवाया गया। यहीं दोनों की भेंट होनी निश्चित हुई।

खूनी भेंट

सूर्य छिप चुका था। अफ़ज़लखां दिन-भर भविष्य को सुनहरी कल्पनाओं में डूबा रहा। शाम को एक हज़ार सिपाहियों के साथ वह पालकी में बैठकर रवाना हुआ। उसकी पालकी के साथ सैयद बांदा नामक एक तलवार का धनी आदमी चल रहा था। पालकी जब निर्दिष्ट स्थान पर पहुंची तो कृष्णजी भास्कर ने सलाह दी कि यदि वह शिवाजी को धोखे में रखना चाहता है तो इतनी फौज के साथ जाना ठीक नहीं। कृष्णजी की सलाह मानकर अफ़ज़लखां केवल दो सिपाहियों के साथ आगे बढ़ा।

शिवाजी अभी तैयारी में लगे थे। सारी रात उनकी तैयारी में बीती थी। उन्होंने मंत्रियों को बुलाकर समझा दिया कि यदि मैं मारा जाऊं तो नेताजी पालकर पेशवा की हैसियत से शासन करेंगे। शिवाजी ने सिर पर कवच पहनकर ऊपर पगड़ी पहनी। सारे शरीर पर लोहे का कवच पहना। ऊपर से लम्बा अंगरखा पहना। बायें हाथ में व्याघ्रनख पहन लिया। अन्त में वे माता जीजाबाई

से आशीर्वाद लेकर आगे बढ़े । साथ में केवल जीवाजी महला और शम्भूजी कावजी दो साथी थे । निर्दिष्ट स्थान पर पहुंचे तो अफज़लखां वहां अकड़कर बैठे थे । भयभीत व्यक्ति की तरह शिवाजी अन्दर प्रविष्ट हुए।

जिसका सिर कभी बीजापुर के नवाब के सामने भी न झुका था, वह अफ़ज़लखां के आगे झुक गया। सलाम करते हुए शिवाजी को गले से लगाने के लिए अफ़ज़ल ने दोनों हाथ फैलाए। दोनों हाथों से उसने शिवाजी को पकड़ लिया। बायें हाथ से गर्दन दबाकर दायें से कटार बगल में मार दी। कटार ने काम नहीं किया। शिवाजी का कवच काम आ गया। मगर गर्दन अभी अफ़ज़ल के हाथ में ही थी। उसे एक झटके से छुड़ाकर शिवाजी ने व्याघ्रनख अफ़ज़ल के पेट में घोंप दिया। अफ़ज़ल का पेट फट गया। दायें हाथ का बिछुआ भी शिवाजी ने उसकी बगल में घुसेड़ दिया।

अफ़ज़ल के शरीर-रक्षक सैयद बांदा ने शिवाजी पर तलवार का वार किया, मगर शिवाजी के शरीर-रक्षक जीवाजी महला ने उसका हाथ वहीं काट दिया। सैयद बांदा भी वहीं मर गया।

पालकीवालों ने अफ़ज़ल के घायल शरीर को पालकी में डाला। मगर शम्भूजी कावजी ने पालकी-वालों का वहीं काम तमाम कर दिया। शम्भूजी ने अफ़ज़ल का सिर धड़ से जुदा कर शिवाजी के सामने हाज़िर किया। इस प्रकार वह विश्वासघाती अपने ही हथियार से मारा गया।

इसी समय जीवाजी महला ने शंख बजा दिया। शिवाजी ने आसपास झाड़ियों में सैकड़ों मराठा वीरों को छिपाया हुआ था। शंख की आवाज़ सुनकर सब शेर की तरह मुगल सेना पर टूट पड़े। मुगल सिर पर पैर रखकर भागे। उनकी सेना का बड़ा हिस्सा वहीं कटकर खप गया।

लड़ाई में अफज़ल के दो लड़के भी शिवाजी के हाथ आए। 56 हाथी, 4000 घोड़े, 1200 ऊंट और 10 लाख रुपये भी शिवाजी के अधिकार में आ गए। विजय की ध्वजाएं प्रतापगढ़ के आकाश में फहराने लगीं।

औरंगज़ेब से मुठभेड़

अफ़ज़लखां की मौत ने दिल्ली में बादशाह को भी चौंका दिया। औरंगज़ेब आगबबूला हो गया। बीजापुर का नवाब तो हिम्मत हार बैठा था। शिवाजी से सुलह करके ही उसे शांति मिली। बीज़ापुर के विजित प्रदेशों पर शिवाजी का अधिकार मान लिया गया। शिवाजी की दृष्टि अब बीजापुर की सीमा से बाहर जाने लगी। दक्षिण में हिन्दू राज्य स्थापित करने की इच्छा भी उनके दिल में जाग उठी। औरंगजेब हिन्दुस्तान में मुस्लिम राज्य स्थापित करना चाहता था, शिवाजी हिन्दू राज्य की नींव रख रहे थे। शिवाजी की सफलता ने औरंगज़ेब को जगा दिया। शिवाजी को नीचा दिखाने में वह अपने प्रयत्नों की सफलता समझने लगा।

दक्षिण का सूबेदार शाइस्ताखां औरंगज़ेब का मामा था। शाइस्ताखां कई लड़ाइयों में विजय प्राप्त कर चुका था। उसे औरंगज़ेब ने हुक्म भेजा कि दक्षिण पर चढ़ाई करो और शिवाजी के जीते हुए प्रदेशों को मुगल राज्य में मिला लो। शाइस्ताखां की सहायता

के लिए कुल विद्रोही राजा जसवन्तसिंह को भेजा गया। दोनों की सम्मिलित सेना 25 फरवरी के दिन शिवाजी का मान-मर्दन करने के लिए चल पड़ी।

शिवाजी को मुगल सेना के उस तूफान के सामने कई बार हारना पड़ा। मुगल सेनाओं ने एक के बाद दूसरे किले पर अधिकार करना शुरू कर दिया। पूना तक प्राय: सब किले शाइस्ताखां के हाथ में आ गए। दो वर्ष तक शाइस्ताखां का भाग्य चमकता रहा। इन दो वर्षों में छोटी-छोटी लड़ाइयां अवश्य होती रहीं। शिवाजी की फौजें मौका पाकर मुगल सेनाओं पर टूटती रहीं, मगर मुगल सेना का बाल बांका न हुआ। पूना में शाइस्ताखां का राज्य था। पूना के किले में मुगल सेनापति चैन के दिन बिता रहा था। मदिरा का दौर-दौरा था। भोग-विलास का बाज़ार गर्म था।

ऐसे ही समय एक दिन शिवाजी ने शाइस्ताखां को चकित कर दिया। रंग में भंग पड़ गया। रात के बारह बजे थे। रमज़ान के दिन थे। केवल बावर्चीखाने में धुआं उठ रहा था। चार सौ आदमी अन्दर कूद गए। इन कूदनेवालों में शिवाजी और चिमनाजी बापू थे। नवाब भोग-विलास में मस्त अन्तःपुर में पड़ा था। शोर सुनकर बांदियों ने शाइस्ताखां को जगाया।

अभी वह पूरा उठ भी न पाया था कि शिवाजी सिर पर जा धमके। इतने में ही किसी ने बत्ती बुझा दी। अंधेरे में शाइस्ताखां भाग गया, मगर भागते-भागते भी उसका अंगूठा शिवाजी की तलवार से कट ही गया। शाइस्ताखां का लड़का अबुलफतह मराठों की तलवारों के काम आया।

ये वीर आधी रात के समय कैसे आ धमके थे? शहर में एक पक्षी भी बिना इजाज़त के नहीं आ सकता था। पर शिवाजी ने चालाकी से काम लिया था। वे और उनके सब साथी वेश बदलकर किसी हिन्दू पैदल सिपाही की बरात के रूप में पूना में घुसे थे।

यह घटना 5 अप्रैल, 1663 के दिन हुई। औरंगजेब उस समय कश्मीर-यात्रा की तैयारियां कर रहा था। शाइस्ताखां की पराजय का समाचार सुनकर वह क्रोध से लाल हो गया। उसने शाइस्ताखां पर क्रोध निकाला। उसे दक्षिण से हटाकर बंगाल भेज दिया। अफज़लखां के बाद शाइस्ताखां की दुर्गति होने के कारण मुगल सेनापतियों की धाक दक्षिण से उठ गई। दक्षिण के हिन्दू शिवाजी को अजेय समझने लगे।

घोर युद्ध

औरंगज़ेब ने सम्पूर्ण मुगल-साम्राज्य की पूरी शक्ति शिवाजी के दमन में लगा दी। इस बार मुगल सेनाध्यक्ष राजपूतों के कुशल वीर राजा जयसिंह को बनाया गया। जयसिंह ने पूना में छावनी डाल दी। शिवाजी मैदान छोड़कर पहाड़ी इलाकों में चले गए। पुरन्दर के दुर्ग को उन्होंने अपना केन्द्र बनाया। मुगल सेनाएं पहाड़ों पर भी छा गईं। वज्रगढ़ नाम का दुर्ग दिलेरखां ने ले लिया। वज्रगढ़ पुरन्दर की रक्षा का साधन था। उसके हाथ से निकल जाने पर पुरन्दर की रक्षा खतरे में पड़ गई। फिर भी मराठा वीर हिम्मत नहीं हारे। सेनापति मुरार बाजीप्रभु पर पुरन्दर की रक्षा का भार था। वह अपने 700 वीरों को लेकर दिलेरखां की 5000 फौज पर टूट पड़ा। ये 700 सैनिक शत्रुओं से अधिक वीर निकले। युद्धस्थल में लाशें बिछ गईं। बाजीप्रभु 5000 मुगल सैनिकों को चीरकर दिलेरखां के सामने आ गया। बाजीप्रभु का वहीं प्राणांत हो गया। सेनापति की मृत्यु के बाद मराठे वीर कुछ हतोत्साह हो गए। नीति-कुशल शिवाजी ने भी जयसिंह के पास सन्धि का संदेश भेजा।

शेर पिंजरे में

राजा जयसिंह ने सन्धि करना स्वीकार कर लिया। सन्धि की शर्तें औरंगज़ेब को भेजी गईं। औरंगज़ेब ने सब शर्तें मान लीं। शर्तें मान लेने के बाद शिवाजी ने उनकी सेनाओं को बीजापुर के जीतने में भी सहायता पहुंचाई। औरंगज़ेब ने खुश होकर एक कीमती शाल शिवाजी को भेंट किया और चिट्ठी द्वारा शिवाजी का दरबार में शाही स्वागत करने की इच्छा प्रकट की। राजा जयसिंह शिवाजी की सुरक्षा का जामिन बना। आखिर जयसिंह की प्रेरणा पर शिवाजी ने दिल्ली-दरबार में जाना स्वीकार कर लिया।

कुछ समय की यात्रा के बाद शिवाजी आगरा के पास पहुंच गए। वहां केवल एक छोटे-से मुगल अफ़सर मुखलिफखां तथा जयसिंह के पुत्र रामसिंह ने उनका स्वागत किया। शिवाजी इस अपमान के घूंट को चुपचाप पी गए। दरबार में बादशाह औरंगज़ेब अपनी अनूठी आन-बान से बैठा था। शिवाजी के मन में मुगल साम्राज्य के वैभव की धाक बिठाना उसका खास

उद्देश्य था। अन्य राजाओं के साथ शिवाजी ने भी तीस हज़ार मोहरें भेंट कीं। औरंगज़ेब ने भेंट स्वीकार करते हुए शिवाजी को पांचहज़ारियों में बैठने का संकेत किया। यह शिवाजी का सरासर अपमान था। कई पांचहज़ारी सामंत उनके नौकर थे।

शिवाजी का पुत्र भी पांचहज़ारी था। शिवाजी इस अपमान को चुपचाप सहन न कर सके। दरबार में ही उन्होंने जयसिंह को उलाहना दिया। उनके कुपित शब्दों से दरबार में सन्नाटा छा गया। शिवाजी के इस क्रोध का परिणाम यह हुआ कि वे सिपाहियों के घेरे में आ गए। शिवाजी कैद हो गए। जिस व्यक्ति ने अपने सब भाइयों का खून किया था, अपने बाप को कैद किया था, उसका विश्वास शिवाजी ने कर लिया, यह आश्चर्य की बात है।

पिंजरे से बाहर

औरंगज़ेब की धूर्तता सफल हो गई। मगर शिवाजी औरंगज़ेब से भी एक कदम आगे बढ़ गए। शिवाजी 'शठे शाठ्यम्' की नीति के अनुयायी थे। नीति द्वारा उन्होंने औरंगज़ेब की धूर्तता के पंख काट डाले।

शिवाजी ने जेल से बाहर निकलने की उत्सुकता ज़ाहिर करना एकदम छोड़ दिया। शिवाजी को पालतू बनता देखकर औरंगज़ेब खुश हो गया। बादशाह की खुशी के साथ पहरे की कड़ाई कम होती गई।

इतने में औरंगज़ेब को शिवाजी के बीमार होने का समाचार मिला। मरीज़ की रोग-परीक्षा के लिए वैद्य-हकीम आने लगे। कई हकीम-वेशधारी मराठे भी आ गए। धीरे-धीरे शिवाजी के नीरोग होने का समाचार भी बादशाह के कानों तक पहुंचा। बादशाह ने अच्छे होने की खुशी में मिठाई बांटने की शिवाजी की प्रार्थना स्वीकार कर ली। कई सप्ताहों तक फलों और मिठाइयों के टोकरे आते-जाते रहे। एक दिन उन्हीं टोकरों में बैठकर शिवाजी व शंभाजी जेल से बाहर

हो गए। शेर पिंजरे से निकल गया।

शिवाजी अपने दो सहायकों के साथ घोड़ों पर सवार होकर मथुरा पहुंच गए। तीनों ने साधुओं के कपड़े पहने हुए थे। साधुवेश में तीनों बनारस, प्रयाग और बंगाल होते हुए दक्षिण को चले। एक दिन अकस्मात् ही शिवाजी अपनी माता जीजाबाई के सम्मुख उपस्थित हो गए। मराठे वीरों की प्रसन्नता का ठिकाना न रहा। खुशियों के नगाड़े बज उठे। उनकी खोई हुई चीज़ मिल गई। हिन्दू धर्म की लाज बच गई।

मुगलों से संधि और शर्तें

शिवाजी के निकल भागने का क्रोध औरंगज़ेब ने राजा जयसिंह और उसके पुत्र रामसिंह पर उतारा। जयसिंह को दक्षिण से बुला लिया। रामसिंह को भी दरबार में आने की मनाही कर दी गई। जयसिंह की जगह राजकुमार मुअज़्ज़म और राजा जसवन्तसिंह शिवाजी को दण्ड देने के लिए तैनात किए गए। मगर दोनों ही शिवाजी पर हाथ डालने में संकोच करते थे। शिवाजी ने भी संधि में कोई हानि न देखकर सन्धि कर ली। इस सन्धि द्वारा शिवाजी को पूना का हकदार मिल गया। चाकण और सूपा प्रान्त भी मिल गए।

लगभग तीन साल वह सन्धि रही। मगर औरंगज़ेब इस सन्धि से संतुष्ट न था। उसने मुअज़्ज़म को फरमान भेजा कि वह शिवाजी को धोखा देकर उसके सेनापति प्रतापराव गूजर को कैद कर ले। मुअज़्ज़म ने फरमान आने से पहले ही प्रतापराव गूजर को मार दिया। मुअज़्ज़म अपने बाप के समान विश्वासघाती नहीं बनना चाहता था।

शिवाजी को औरंगज़ेब की आज्ञा का पता लगा तो वे भी युद्ध के लिए तैयारियां करने लगे। शिवाजी उस समय रायगढ़ में थे। माता जीजाबाई ने शिवाजी को सिंहगढ़ पर अधिकार करने के लिए उत्साहित किया। शिवाजी ने प्रतिज्ञा कर ली।

सिंहगढ़ की विजय

सिंहगढ़ पर मुगलों के प्रतिनिधि उदयभानु का अधिकार था। उदयभानु का शरीर बहुत बड़ा था। देखने में वह पूरा दैत्य लगता था। किले में चन्द्रावली नाम का एक खूनी हाथी भी रहता था।

ऐसे शत्रु पर विजय पाना सरल काम नहीं था। शिवाजी को केवल अपने बालसखा तानाजी मालसुरे पर विश्वास था। उसे बुलाया गया। वह अपने पुत्र के विवाह-कार्य को अधूरा छोड़कर आ गया।

उसके साथ जो बारह हज़ार की सेना थी, वह बिलकुल ग्रामीण थी। शिवाजी तानाजी से गले लगकर मिले। माता जीजाबाई ने भी तानाजी का स्वागत किया। तानाजी के सिर के चारों ओर दीपकों की परिक्रमा की और जयमाला पहनाई।

तानाजी ने माता जीजाबाई के सामने सिर झुकाकर सिंहगढ़ को जीतने का व्रत लिया। सिंहगढ़ एक दुर्गम पहाड़ी पर खड़ा था। ऊपर चढ़ने का कोई भी मार्ग नहीं था।

जब सब किले के नीचे पहुंच गए तो तानाजी ने चादर बिछाकर दस बीड़े पान के रख दिए और ललकारकर कहा, "जिसके दिल में रस्सी बांधकर ऊपर जाने की हिम्मत हो, वह यह बीड़ा उठाए।" किसीने बीड़ा न उठाया, तब तानाजी स्वयं इस कार्य को करने के लिए तैयार हुए। कमन्द के सहारे मराठा सिपाही ऊपर चढ़ने लगे। सबसे पहले तानाजी चढ़े। दांतों में तलवार थामकर सब वीर कमन्द पर चढ़ रहे थे। अभी केवल पचास सिपाही ही ऊपर पहुंच पाये थे कि कमन्द टूट गई। ऊपर के सिपाही ऊपर और नीचे के नीचे रह गए।

उन पचास सिपाहियों ने ही किले के 1200 वीरों का काम तमाम करके सिंहगढ़ पर विजय प्राप्त कर ली। उदयभानु ने अपने बारह लड़कों को लड़ाई में भेजा। जब बारह लड़के मर गए, तो भूखे शेर की तरह स्वयं झपटा। तानाजी और उदयभानु में देर तक लड़ाई हुई। आखिर उदयभानु और तानाजी दोनों एक-दूसरे की तलवारों से घायल होकर वहीं धराशायी हुए। सेनापति की मृत्यु के बाद उनके भाई सूर्याजी ने किले पर हमला किया, शीघ्र ही सिंहगढ़ पर महाराष्ट्र का भगवा झण्डा लहराने लगा। गढ़ के बाहर

की कुटियों में आग लगाकर शिवाजी को विजय की सूचना दे दी गई।

समाचार पाते ही शिवाजी घोड़े पर चढ़कर आए। वहां विजय की खुशियां थीं, मगर अपने बालसखा तानाजी का शव देखकर उनका दिल रो उठा। सबने शिवाजी को जीत के लिए बधाई दी। मगर शिवाजी ने कहा, "गढ़ आला, पण सिंह गला"—अर्थात् गढ़ आ गया परन्तु सिंह चला गया।

राजतिलक

अभी तक मराठा राज्य केवल पूना की जागीर का विस्तृत भाग समझा जाता था। शिवाजी भी एक बड़े जागीरदार ही माने जाते थे। जागीरदार से राजा की पदवी पाने के लिए शिवाजी ने विधिवत् राजतिलक की रस्म अदा की। लगभग पचास हज़ार ब्राह्मण लोग उत्सव में सम्मिलित हुए। दो लाख आदमी उत्सव के दर्शनार्थ बाहर से आए। उत्सव में दोनों हाथों से हीरे-मोती लुटाए गए। लगभग छः करोड़ रुपया तिलकोत्सव में खर्च किया गया। माता जीजाबाई का हृदय उस दिन आनन्द से पुलकित था। उस दिन वें संसार की सबसे अधिक भाग्यशाली मां थीं। शायद उस दिन के लिए प्राण धारण किए हुए थीं, क्योंकि उसके बारह दिनों के बाद उन्होंने प्राण विसर्जित कर दिए।

राजतिलक के बाद शिवाजी ने मराठा राज्य का विस्तार करने के लिए कर्नाटक पर धावा किया। शिवाजी के साथ सत्तर हज़ार सेना थी। हैदराबाद के अब्दुल हसन ने माथा टेक दिया। विलोर ने आत्म-

समर्पण कर दिया। शिवाजी के भाई व्यंकोजी ने हार मान ली। शत्रुसेना को कृष्णा नदी के पार धकेलकर उन्होंने दोआब पर अधिकार कर लिया। यह विजय यात्रा बारह मास में समाप्त हुई। सात सौ मील की दूरी तक शिवाजी ने अपना प्रभाव कायम कर लिया। इन बारह महीनों में ही मराठा-राज्य की सीमा का विस्तार दुगुना हो गया।

सूर्यास्त

इस समय शिवाजी का भाग्य-सूर्य शिखर पर पहुंच चुका था। मुगल-साम्राज्य शिवाजी से कांपता था। मराठा राज्य कृष्णा नदी तक पहुंच चुका था। गोलकुण्डा और बीजापुर के नवाब शिवाजी की कृपा प्राप्त करने को लालायित रहते थे।

इतने प्रतापशाली होते हुए भी शिवाजी का हृदय भविष्य की चिन्ता से व्यथित रहता था। राणा प्रताप की तरह उन्हें भी अपनी सन्तान से विशेष आशा न थी। शिवाजी का पुत्र शंभाजी विलासी हो गया था। उसे उन्होंने पन्हाला के किले में कैद कर रखा था। पारिवारिक कलह ने भी शिवाजी को दुःखी कर दिया था।

1680 ई० के मार्च महीने में शिवाजी एक लड़ाई से वापस आने पर बीमार हो गए। घुटना सूज गया। बहुत औषधियां दी गईं, मगर घुटना ठीक न हुआ। आखिर सात दिन तक रोग झेलने के बाद 3 अप्रैल, 1680 ई० को महाराष्ट्र का सूर्य अस्त हो गया।

आशा है, यह पुस्तक आपको पसन्द आई होगी। इसी प्रकार अन्य महापुरुषों की जीवनियां भी आप हमारे यहां से प्राप्त कर सकते हैं। शिक्षा भारती का सदैव यह प्रयास रहा है कि विविध विषयों में उत्कृष्ट प्रकाशनों से हिन्दी साहित्य को समृद्ध किया जाए। यह सब आपके हार्दिक सहयोग पर ही निर्भर है। यदि आप इस प्रकार की पुस्तकें पढ़ने में रुचि रखते हों तो हमें लिखिए, हम आपकी हर प्रकार से सहायता करने की कोशिश करेंगे।

सरल प्रेरणाप्रद जीवनियां

मेरा बचपन
झांसी की रानी
रवीन्द्रनाथ टैगोर
लाला लाजपतराय
सरदार पटेल
डॉ० राजेन्द्रप्रसाद
विनोबा भावे
जवाहरलाल नेहरू
महात्मा गांधी
चन्द्रशेखर आजाद
श्यामप्रसाद मुखर्जी
गुरु नानकदेव
सुभाषचन्द्र बोस
शिवाजी
महाराणा प्रताप
चाणक्य
लोकमान्य तिलक
श्रीकृष्ण
स्वामी विवेकानन्द
गणेश शंकर 'विद्यार्थी'
गोस्वामी तुलसीदास
हमारे राष्ट्रनिर्माता
मीराबाई
गुरु तेगबहादुर
ईश्वरचन्द्र विद्यासागर
सरदार भगतसिंह
स्वामी रामतीर्थ
गुरु गोविन्द सिंह
सदाचारी बच्चे
महापुरुषों का बचपन
वीर पुत्रियां
लालबहादुर शास्त्री
आदर्श बालक
आदर्श देवियां
सच्ची देवियां
इन्दिरा गांधी
भारत के महान् ऋषि
अच्छे बच्चे
गौतम बुद्ध
सम्राट् अशोक
वीर हनुमान
हमारे स्वामी
श्री अरविन्द
वीर सावरकर
महर्षि वाल्मीकि
महाकवि कालिदास
साहसी बालक

शिक्षा भारती, कश्मीरी गेट, दिल्ली